ब्लड बैंकों का होगा डिजिटलाइजेशन

■ प्रमुख संवाददाता, नई दिल्ली

दिल्ली में ब्लड ट्रांसफ्यूजन रिप्लेसमेंट डोनर पर टिका हुआ है, जबकि सरकार पूरी तरह से वॉलंटरी डोनेशन लागू करने पर विचार कर रही है। लेकिन मौजूदा हालात ऐसे हैं कि केवल दो से तीन पर्सेंट ब्लड डोनेशन ही वॉलंटरी डोनेशन से संभव हो पा रहा है। मेडिकली ब्लड डोनेट करना सेहत के लिए बेहतर माना जाता है, इसके बावजूद लोग डोनेशन के लिए आ गे नहीं आते।

दिल्ली में औसतन हर महीने 10 से 12 हजार यूनिट ब्लड की जरूरत होती है। एम्स, सफदरजंग, आरएमएल, अपोलो, मैक्स, बीएलके सुपर स्पेशिएलिटी जैसे सभी हॉस्पिटलों को मिलाकर लगभग 70 से ज्यादा ब्लड बैंक हैं। इन सभी अस्पतालों में होने वाली सर्जरी और इलाज में हर महीने 10 से 12 हजार यूनिट ब्लड की जरूरत होती है। लेकिन इसमें से अधिकांश में मरीज के रिलेटिव डोनेशन के लिए आते हैं। बीएलके सुपर स्पेशिएलिटी हॉस्पिटल में लैब के डायरेक्टर डॉ. अनिल हांडू ने कहा कि अपनी मर्जी से डोनेशन करने वालों की संख्या 10 पर्सेंट ही है। हालांकि यह ब्लड डोनेशन कैंप का डेटा है। हॉस्पिटल पहुंच कर डोनेट करने वालों की संख्या अभी भी केवल 2 से 3 पर्सेंट ही है, चाहे अस्पताल कोई भी हो।

कई बीमारियों में ब्लड की जरूरत

ऑनक्वेस्ट लैब के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर(सीईओ) डॉक्टर रवि गौड़ के अनुसार एनीमिया, ब्लड कैंसर, इम्यून डिसऑर्डर और ब्लीडिंग डिसऑर्डर जैसी बीमारियों में ब्लड की जरूरत होती है। किसी इमरजेंसी या एक्सिडेंट की स्थिति में काफी ब्लड की जरूरत होती है और यह केवल वॉलंटरी डोनर से ही संभव है। उन्होंने बताया कि भारत में भारी मात्रा में खून की कमी है। आज भी जब भारत में किसी को खून की जरूरत होती है तो उसे ब्लड बहुत मुश्किल से ही मिल पाता है। भारत में हर साल 5 करोड़ यूनिट खून की जरूरत होती है लेकिन बस 2.5 करोड़ का ही बंदोबस्त हो पाता है।

90 दिन बाद पुरुष और **120** दिन बाद महिलाएं दोबारा ब्लड डोनेट कर सकती हैं

नेगेटिव डोनर की कमी : डॉक्टर अनिल ने बताया कि देश में आठ से बारह पर्सेंट निगेटिव ब्लड ग्रुप के लोग हैं और बाकी पॉजिटव ब्लड ग्रुप से। निगेटिव में A, B, AB और O आते हैं, इसमें AB निगेटिव की केवल 2 से 3 पर्सेंट की आबादी है। जब इमरजेंसी में इस ग्रुप के ब्लड की जरूरत होती है तो मरीजों को समय पर ब्लड नहीं मिल पाता। क्योंकि परिवार में डोनर नहीं होता। ऐसे में वॉलंटरी डोनर से ही ब्लड मिल सकता है। देश में सबसे ज्यादा B पॉजिटिव ब्लड ग्रुप के लोग हैं, इनकी संख्या करीब 50 पर्सेंट है।

कौन कर सकता है डोनेशन : एशियन हॉस्पिटल के ब्लड बैंक और लैब सर्विसेज डिपार्टमेंट की एचओडी डॉ. उमा रानी का कहना है कि 18 से 65 साल के बीच का कोई भी हेल्दी इंसान एक रेगुलर इंटरवल के बाद ब्लड डोनेट कर सकता है।

ब्लड डोनेशन के फायदे : एक व्यक्ति ब्लड डोनेट करके तीन लोगों को जीवन दे सकता है। इस बारे में फैली कुछ भ्रांतियों को दूर किया जाना चाहिए। पुरुष 90 दिन बाद और महिलाएं 120 दिन बाद दोबारा ब्लड डोनेट कर सकते हैं।

डॉ. अनिल ने कहा कि केंद्र सरकार ने एक प्रपोजल तैयार किया है, जिसके तहत देश भर के ब्लड बैंकों को एक छत के नीचे लाया जाएगा। सभी ब्लड बैंकों को ऑनलाइन कनेक्ट करके डिजिटलाइज किया जाएगा, ताकि पूरे देश में एक समय में पता चल सके कि कहां पर किस यूनिट का कितना ब्लड मौजूद है। इसके लिए हर ब्लड बैंक को रोजाना पोर्टल पर जाकर अपने बैंक में जमा ब्लड का अपडेट करना अनिवार्य होगा। बहुत जल्द यह इफेक्टिव हो जाएगा।